

---

lakShmIgadyam

श्रीलक्ष्मीगद्यम्

Document Information

---

Text title : lakShmIgadyam

File name : lakShmIgadyam.itx

Category : gadyam, devii, stotra, lakShmI, devI

Location : doc\_devii

Transliterated by : Malleswara Rao Yellapragada malleswararaoy at yahoo.com

Proofread by : Malleswara Rao Yellapragada malleswararaoy at yahoo.com

Source : Venkatesha KavyakalApa

Latest update : June 10, 2016

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 29, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीलक्ष्मीगद्यम्



श्रीरस्तु ।

श्रीवेङ्कटेशमडिषी श्रितकल्पवल्ली  
पद्मावती विजयतामिड पद्मउस्ता ।  
श्रीवेङ्कटाप्य धरणीभृदुपत्यकायां  
या श्रीशुकस्य नगरे कमलाकरे भूत् ॥ १ ॥

भागवति जयजय पद्मावति ले ॥ १ ॥

भागवतनिकर अडुतर भयकर अडुलोद्यम यमसद्मायति ले ॥ २ ॥

भविजन भयनाशि भाग्यपथोराशि वेलातिगलोल विपुलतरोल्लोल  
वीथिलीलावले ॥ ३ ॥

पद्मजभवयुवति प्रभुभामरयुवति परिचारकयुवति पितति सरति सतत  
विरयित परिचरए चरणाभोरुडे ॥ ४ ॥

अङ्कुणवैङ्कुण मडाविभूतिनायडि ॥ ५ ॥

अभिलाएडकोटि अड्माएडनायडि ॥ ६ ॥

श्रीवेङ्कटनायडि ॥ ७ ॥

श्रीमति पद्मावति ॥ ८ ॥

जय विजयीभव ॥ ९ ॥

क्षीराम्भोराशिसारैः प्रभवति रुचिरैः यत्स्वरूपे प्रदीपे  
शेषाण्येषामृजुषाण्य जनिषत स्सुधाकल्पद्वेवाङ्गनाद्याः ।  
यस्यास्सिंहासनस्य प्रविलसति सदा तोरणं वैजयन्ती  
सेयं श्रीवेङ्कटाद्रि प्रभुवरमडिषी भातु पद्मावती श्रीः ॥ २ ॥

जय जय जय जगदीश्वरकमलापति करुणारस वरुणालयवेले ॥ १ ॥

थरशाम्भुज शरशागत करुणारस वरुणालय मुरभाधन  
करभोधन सङ्कलीकृत शरशागत जनतागमवेले ॥ २ ॥

डिञ्चिदुदञ्चित सुस्मितमञ्जित यन्द्रकलामदसूचित सम्पद  
विमल विलोचन जितकमलानन सङ्कदवलोकन सज्जनदुर्जन  
भेदविलोपन लीलालोले ॥ ३ ॥

शोभनशीले ॥ ४ ॥

शुभगाण्णाले ॥ ५ ॥

सुन्दरभाले ॥ ६ ॥

कुटिलनिरन्तर कुन्तलमाले ॥ ७ ॥

मणिवरविरचित मञ्जुलमाले ॥ ८ ॥

पद्म सुरभिगन्ध मार्दवमकरन्द इलिताकृतिबन्ध पद्मिनी भाले ॥ ९ ॥

अङ्कुण्ठवैङ्कुण्ठ मङ्गाविभूति नायकि ॥ १० ॥

अम्बिलाण्डकोटि अम्बलाण्डनायकि ॥ ११ ॥

श्रीवेङ्कटनायकि ॥ १२ ॥

श्रीमति पद्मावति ॥ १३ ॥

जय विजयीभव ॥ १४ ॥

श्रीशैलानन्तसूरे स्सधव मुपवने थोरलीलां थरन्ती  
थाम्भेये तेन अद्भुत स्वपतिमवरयत्तस्य कन्या सती या ।  
यस्याः श्रीशैलपूर्णा श्चशुरति य उरे स्तातभावं प्रपन्नः  
सेयं श्रीवेङ्कटाद्रि प्रभुवरमडिशी भातु पद्मावती श्रीः ॥ ३ ॥

भर्वाभवदतिगर्वा कृत गुरुमेर्वाशगिरि भुभोर्वाधरकुल  
द्वर्वाकरदयितोर्वा धर शिभरोर्वा इण्णिपति गुर्वाश्चरकृत  
रामानुजमुनि नामाङ्कित अङ्गुलूमाश्रय सुरधामालय वरनन्दन वन  
सुन्दरतरानन्द मन्दिरानन्त गुरुवनानन्त डेलियुत निभृततर  
विहृति रत लीलाथोर राजकुमार निजपति स्वैरसलविडार समय  
निभृतोषित इण्णिपति गुरुभक्ति पाशवशंवद निगृहीताराम  
यम्पड निबद्धे ॥ १ ॥

भक्तजनावन भङ्ग श्रद्धे ॥ २ ॥

भजन विमुञ्ज भविजन भगवद्गुणसदन समय निरीक्षण  
सन्तत सन्नद्धे ॥ ३ ॥

भागधेयगुरु भव्यशेषगुरु आहुमूल धृत आविकाभूते ॥ ४ ॥

श्रीवेङ्कटनाथ वरपरिगृहीते ॥ ५ ॥

श्रीवेङ्कटनाथतातभूत श्रीशैलपूर्णागुरु गृहस्नुषाभूते ॥ ६ ॥

अङ्कुणवैङ्कुण मडाविभूतिनाथकि ॥ ७ ॥

अभिलासकोटि आम्नासनाथकि ॥ ८ ॥

श्रीवेङ्कटनाथकि ॥ ९ ॥

श्रीमति पद्मावति ॥ १० ॥

जय विजयीभव ॥ ११ ॥

श्रीशैले केविकावे मुनिसमुपगमे या भयात्प्राङ् प्रयाता

तस्यैवोपत्यकायां तदनु शुङ्गपुरे पद्मकासारमध्ये ।

प्रादुर्भूताऽरविन्दे विक्रयदलयये पत्युरुत्रैस्तपोभिः

सेयं श्रीवेङ्कटाद्रिप्रभुवरमहिषी भातु पद्मावती श्रीः ॥ ४ ॥

भङ्गे ॥ १ ॥

भक्तजनावन निर्निद्रे ॥ २ ॥

भगवद्दक्षिण वक्षोलक्षण लाक्षालक्षित मृदुपदमुद्रे ॥ ३ ॥

भञ्जित भव्यनव्यदरदलितदल मृदुल कोकनद मदविलस

दधरोर्ध्व विन्यास सव्यापसव्यकर विराजदन्तित शरणाभक्तगण

निजयरण शरणीकरणाभय वितरण निपुण

निरुपण निर्निद्रमुद्रे ॥ ४ ॥

उल्लसद्दूर्ध्व तरापरकर शिपरयुगल शोभर निजमञ्जिम

मदभञ्जन कुशलवदन विधुमण्डल विलोकन विदीर्ण वृद्धयता

विलम्बधरदर विदलितदल कोमल कमलमुकुल युगलनिरर्गल

विनिर्गलत्कान्ति सुमुद्रे ॥ ५ ॥

श्रीवेङ्कट शिपरसडमहिषी निकर कान्तलीलावसर सङ्गतमुनिनिकर

समुद्दित भङ्गलतर भयलसदपसारकेलि भङ्गमान्ये ॥ ६ ॥

श्रीशैलाधीश रथित दिनाधीश भिम्बरमाधीशविषय तपोजन्ये ॥ ७ ॥

श्रीशैलासन्न शुक्पुत्रीसम्पन्न पद्मसर उत्पन्न पद्मिनीकन्ये ॥ ८ ॥

पद्म सरोवर्य विरथित मलाश्रय्यं घोरतपश्चर्यं

श्रीशुकमुनिधुर्यं कामित वदान्ये ॥ ९ ॥

मानव कर्मजाल दुर्मलमर्म निर्मूलन लब्धवर्षा निजसालिलजवर्षा

निर्जित दुर्वर्षा वज्रस्फटिक सवर्षा सलिल सम्पूर्णा

सुवर्षामुषरी सैकत सञ्जात सन्तत मकरन्द भिन्दुसन्दोष

निष्यन्द सन्दानितामन्दानन्द मिलिन्द वृन्द मधुरतर ऊङ्गाररव

रुचिरसन्ततसम्बुल्ल मल्ली मालती प्रमुष प्रतति वितति कुन्दकुरवक

मरुवक दमनकादि गुल्मकुसुम मल्लिम धुम धुमित सर्व दिङ्मुष

सर्वतोमुष मङ्गीयामन्द माङ्गलाविरल नारिकेल निरवधिक डमुक

प्रमुष तरुनिकरवीथि रमणीय विपुल तटोद्यान विडारिणि ॥ १० ॥

मञ्जुलतर मणिडारिणि ॥ ११ ॥

मङ्गीयतर मणिजिततरणि मकुटमनोडारिणि ॥ १२ ॥

मन्थरतर सुन्दरगति मत्तमराल युवति सुगति मदापडारिणि ॥ १३ ॥

कलकण्ठ युवाकुण्ठ कण्ठनाद कलव्याडारिणि ॥ १४ ॥

अकुण्ठवैकुण्ठ मलाविभूतिनायकि ॥ १५ ॥

अम्बिलाण्डकोटि ब्रह्माण्डनायकि ॥ १६ ॥

श्रीवेङ्कटनायकि ॥ १७ ॥

श्रीमति पद्मावति ॥ १८ ॥

जय विजयीभव ॥ १९ ॥

यां लावण्यनर्दी वदन्ति कवयः श्रीमाधवाम्भोनिधिं

गच्छन्तीं स्ववशङ्गतांश्च तरसा जन्तून्नयन्तीमपि ।

यस्या मानसनेत्रदस्त यरणाधङ्गानि भूषारुथी

रम्भोजान्यमलोज्ज्वलं च सलिलं सा भातु पद्मावती ॥ ५ ॥

अम्भोरुडवासिनि ॥ १ ॥

अम्भोरुडासन प्रमुष्णाभिल भूतानुशासिनि ॥ २ ॥

अनवरतात्मनाथ वक्षस्त्रिंशसाध्यासिनि ॥ ३ ॥

अङ्घ्रियुगावतार पथसन्तत सङ्गाडमान धोरतराभङ्गुर  
संसार धर्मसन्तप्त मनुज सन्ताप नाशिनि ॥ ४ ॥

भङ्गुल कुन्तल वदनमण्डल पाणिपल्लव रुचिरलोचन सुभगकन्दरा  
भाङ्गुवल्किरा जघन नितम्ब मण्डलमय वितत शैवाल सम्कुल्ल कमल  
कुवलय कम्बुकमलिनी नालोत्तुङ्ग विपुलपुलिनशोभिनि ॥ ५ ॥

माधव मહार्णवगाडिनि ॥ ६ ॥

महितलावण्यमहावाडिनि ॥ ७ ॥

मुपयन्द्र समुधत भालतलविराजमान किञ्चिदुदञ्चित  
सूक्ष्मात्र कस्तूरीतिलक शूल समुद्भूतभीति विशीर्णसमुञ्जित  
सम्भुभभागपरिसरयुगल सरभस विसृमर तिमिर निकर सन्देह  
सन्दायि ससीमन्तकुन्तल कान्ते ॥ ८ ॥

स्फुटिक मणिमय कन्दर्प दर्पाण सन्देह सन्दोडि सकल जन सम्मोडि  
हृलहृलविमललावण्य ललित सततमुदित मुदितमुपमण्डले ॥ ९ ॥

महित भ्रष्टिम मडिममन्दडासा सडिष्णु तदुदय समुदित  
कलभोदीर्णारुणवर्ण विभ्रमदविडम्बित परिणत भिम्बविद्रुम विवसदोष्ट  
युगले ॥ १० ॥

परिडसित दरडसित कोकनद कुन्दरद मन्थरतरोद्भवत विसृत्वत  
कान्तिवीचि कमनीयामन्द मन्दडास सदनवदने ॥ ११ ॥

समुज्ज्वलतर मणितर्जित तरणिताटङ्ग निराटङ्ग कन्दलितकान्ति पूर  
करम्बित कर्णशङ्खवीवलये ॥ १२ ॥

बडिरुपगत स्फुरणाधिगतान्तरङ्गाण भूषणगण वदन कोशसदन  
स्फुटिक मणिमय भित्ति शङ्खाङ्कुरण यणप्रतिहृलित कर्णपूर  
कर्णवतंस ताटङ्ग कुण्डल मण्डन निगनिगायमान  
विमलकपोल मण्डले ॥ १३ ॥

निजभ्रुकुटी भटीभूत त्र्यक्षा षाक्षद्वादशाक्षसडस्राक्ष  
प्रभृति सर्वसुपर्व शोभन भ्रूमण्डले ॥ १४ ॥

निटलङ्गलक मृगमदतिलकच्छल विलोक लोक विलोचन  
 दोषविरचित विदलन वदन विधुमण्डल विगलित नासिका प्रणालिका  
 निगूढ निस्तृत नासाग्रस्थूल मुक्ताङ्गलच्छलाभिव्यक्त वदन  
 भिलनिवीन कण्ठनालिकान्तः प्रवृत्त ग्रीवामध्योच्छ भागकृत  
 विभागाग्रीवागर्त विनिस्तृत पृथुल विलसद्गुरोर्जशैल युगल  
 निर्जर जरीभूत गम्भीर नाभि उदाव गाढ विलीन दीर्घतर  
 पृथुल सुधाधारा प्रवालयुगल विभ्रमाधार विस्पष्ट वीक्ष्यमाण  
 विशुद्धस्थूल मुक्ताङ्गल माला विद्योतित द्विगन्तरे ॥ १५ ॥

सकलाभरण कलाविलासकृत जङ्गमचिरस्थायि  
 सौदाभनीशङ्काङ्कुरे ॥ १६ ॥

कनक रशनाकिङ्किणी कलनादिनि ॥ १७ ॥

निज जनतागुण निजपतिनिकट निवेदिनि ॥ १८ ॥

निष्पिल जनामोदिनि ॥ १९ ॥

निजपतिसम्भोदिनि ॥ २० ॥

मन्थर तरमेदि ॥ २१ ॥

मन्दमिममवेदि ॥ २२ ॥

मयि मन आघेदि ॥ २३ ॥

मम शुभमवदेदि ॥ २४ ॥

मङ्गलमयि भादि ॥ २५ ॥

अङ्कुण्ठवैकुण्ठ मलाविभूतिनायकि ॥ २६ ॥

अभिलाण्डकोटि ब्रह्माण्डनायकि ॥ २७ ॥

श्रीवेङ्कटनायकि ॥ २८ ॥

श्रीमति पद्मावति ॥ २९ ॥

जय विजयीभव ॥ ३० ॥

शुभाश्री वेङ्कटाद्रि प्रभुवरमहिषी नाम पद्मावती श्रीः

शुभाश्यास्याः कटाक्षामृतरसरसिको वेङ्कटाद्रे रधीशः

शुभाश्रीवैष्णवाली उतकुमत कथावीक्षणै रेतदीयैः

शुचाख्य श्रीशुकर्षेः पुरमनवरतं सर्वसम्पत्समृद्धम् ॥ ६ ॥

श्रीरङ्गसूशिष्टोऽं श्रीशैलानन्तसूखिवश्येन ।

भक्त्या रचितं गद्यं लक्ष्मीः पद्मावती समादत्ताम् ॥ ७ ॥

॥ श्रीलक्ष्मीगद्यं सम्पूर्णां ॥

From a telugu book veNkaTeshakAvyakalApa

Encoded and proofread by Malleswara Rao Yellapragada

malleswararaoy at yahoo.com

---



*lakShmIgadyam*

pdf was typeset on June 29, 2023



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

